# दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
## गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in


दिनांक 15.09.2021

## प्रकाशनार्थ

**आज दिनांक 15 सितम्बर 2021 को युगपुरूष महंत दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यानमाला के छठवें दिन वनस्पति विज्ञान विभाग** द्वारा आयोजित व्याख्यान में **'स्वदेशी औषधीय पौधे'** पर **मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए डॉ. अश्विनी कुमार मिश्रा, क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी गोरखपुर** ने कहा कि आदिकाल से मानव जीवन पूर्ण रूप से प्रकृति प्रदत्त औषधियों के बल पर अपना दीर्घ जीवन व्यतीत करता था और सही अर्थों में यह पौधे प्रकृति का ऐसे वरदान है जो मानव जीवन के कल्याण की संजीवनी सिद्ध होते थे। लेकिन वर्तमान कालखण्ड में विश्व विविध प्रकार के असाध्य रोगों तथा विभिन्न संक्रमणों से ग्रस्त है जो चिकित्सा विज्ञान के लिए एक चुनौति है जिसके लिए चिकित्सा विज्ञान को पुनः अतीत के ओर लौटना पड़ा। इन्होंने वर्तमान कोविड संक्रमण का उल्लेख करते हुए कहा कि यह एक वैश्विक संकट है जिसके चलते स्वदेशी औषधीय (हर्बल मेडिसनल प्लान्टस) की उपयोगिता अनिवार्य हो गयी है। अतीत में ऋषि, महर्षि, तपस्वी वानप्रस्थ व्यतीत करते थे जिसके लिए यह आयुर्वेदिक वनस्पतियां उनके जीवन की रक्षा करती थी। कुछ पौधे प्राचीन काल से ही हमारी पूर्वजों के द्वारा देवताओं के रूप में पूजे जाते थे। जिसमें पीपल, तुलसी, बेल, शमी ऐसे पौधे थे जो मानव जीवन को संरक्षण प्रदान करते थे। वर्तमान समय में भारत में लगभग 447 वनस्पतियां है जो आयुर्वेदिक औषधी के रूप में प्रयुक्त होती हैं। इसमें आंवला, सर्वगंधा, हल्दी, नीम, नींबू, संतरा, जामुन ये ऐसे फल और वनस्पतियां हैं जो अनेक असाध्य रोगों की चिकित्सा में कारगर साबित हुई हैं। इस कोविड संक्रमण के काल में बड़े–बड़े चिकित्सकों ने भी नींबू, संतरा अनन्नास जैसे तत्वों को जीवन रक्षक का प्रमुख साधन बताया। इन्होंने कहा कि आयुर्वेद एक अजर और अमर चिकित्सा पद्धति है जो अनादि काल तक समाज में प्रासंगिक बनी रहेगी।

**अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. वीणा गोपाल मिश्रा** ने कहा कि वर्तमान समाज को विभिन्न महामारियों और संक्रमण से बचने का एक ही सूत्र है प्रकृति की ओर लौटा, इन्होंने प्राचीन कालीन चिकित्सकों धनवन्तरि, सुषेन, चरक आदि का उल्लेख करते हुए कहा कि इनको देखते ही आयुर्वेदिक वनस्पतियों में स्वतःस्फूर्त की स्थिति पैदा हो जाती थी। सम्पूण विश्व ने आज भारत की आयुर्वेदिक चिकित्सा को स्वीकारा है। क्योंकि यह एक ऐसी निर्विघ्न चिकित्सा पद्धति है जिसमें मनुष्य स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए शतायु को प्राप्त कर सकता है।

**कार्यक्रम के प्रारम्भ में प्रस्ताविकी एवं अतिथि स्वागत डॉ. परीक्षित सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान तथा संचालन डॉ. धर्मचन्द्र विश्वकर्मा, प्रभारी, वनस्पति विज्ञान** तथा आभार ज्ञापन डॉ. पवन कुमार पाण्डेय ने किया। कार्यक्रम मे महाविद्यालय के शिक्षक डॉ. सत्यपाल सिंह, डॉ. विवेक शाही, डॉ. सुभाष चन्द्र, मनीष श्रीवास्तव, श्री पवन कुमार पाण्डेय आदि उपस्थित थे।

**डॉ.(वीणा गोपाल मिश्रा)**
**प्राचार्य**